SUMMARY OF THE FINDINGS OF THE STUDY

मनुष्य के सामाजिक जीवन का अध्ययन ही समाजशास्त्र है। जिसके अन्तर्गत समाज की उत्पत्ति, उसके विभिन्न स्वरूप,प्रक्रियायें और उद्देश्य, उन्हें प्रभावित करने वाले कारक तथा सामाजिक जीवन से संबन्ध रखनेवाले अन्य अनेक विषयों का अध्ययन है। इस दृष्टि से मैं ने समकालीन कथा साहित्य में वरिष्ठ नागरिकों के जीवन पर अध्ययन प्रस्तुत किया है।

समाज एवं परिवार परस्पर आश्रित है। सामाजिक गतिविधियों का प्रभाव परिवार पर पड़ता है, ठीक उसी तरह पारिवारिक विसंगतियाँ समाज पर प्रतिफलित होता है। समाज सतत परिवर्तनशील है। जिसके फलस्वरूप सामाजिक विघटन भी होता है। परिवार समाज की मौलिक इकाई है। वैयक्तिक स्तर पर मानव पर सर्वाधिक प्रभाव परिवार का रहता है। जब परिवार व्यक्ति के चिंतन व्यवहार पर नियंत्रण रखने में असमर्थ हो जाता है तो सामाजिक विघटन शुरू होता है। इससे जुड़कर वैयक्तिक सामाजिक मूल्यों और मनोवृत्तियों का ह्रास होता है। पारिवारिक संघटन में परिवर्तन और नैतिक मान्यताओं का पतन सामाजिक विघटन को तीव्रतर बनाते हैं। ये सारी बातें व्यक्ति को भी विघटित स्थिति में पहूँचाता है। और वह सामाजिक मूल्यों के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार करने लगता है। इसप्रकार पारिवारिक संस्था के मूलाधार व्यक्ति और मूल्यह्रास की प्रक्रिया में परिवार का अवमूल्यन होता है। प्रेम, सद्भावना और सहयोग से युक्त आदर्श परिवार का भाव विच्छिन्न हो गया है। समय के साथ बदलते सामाजिक और पारिवारिक खोखलेपन बुजुर्गों की पारिवारिक स्थिति के माध्यम से व्यक्त हो रहा है। पारिवारिक संघटन के मूलाधार बुजुर्गों की अवमानना, निराधार उपेक्षा और

दुर्दशा के ज़रिए समाज में एक हाशिएकृत पीडित वर्ग के रूप में वरिष्ठ नागरिकों की पीढ़ि उभर आयी है। वृद्धावस्था में व्यक्ति में आनेवाले परिवर्तन की वजह से वह घर के संबन्धों में आदर्श,प्यार और सम्मान बनाये रख नहीं पाता। फलतः वह घर में अपनों से पृथक हो जाता है और धीरे धीरे समाज से भी कट जाता है। इस अपमान और असंतोष को बुढ़ापे की दुर्बलता के कारण बुजर्ग वर्ग झेल नहीं पाते। बुजुर्गों की इस दयनीय स्थिति एवं समस्याओं का बहुआयामी चित्र समकालीन उपन्यास एवं कहानी में हम देख सकते हैं। जो हमें इस विकराल स्थिति को जानने और सोचने, विचारने की प्रेरणा देता है। साथ ही परिवार और समाज में बुजुर्गों के स्थान और सम्मान को बनाये रखने का आह्वान भी देता है। परिवार और समाज में गरिमामय जीवन और मृत्यू का अधिकार वरिष्ठ नागरिकों को हैं।

DR.SAILAJA.K
PRINCIPAL INVESTIGATOR
UGC MINOR RESEARCH PROJECT

Dr. K. SAILAJA
Assistant Professor
Dept. of Hindi
Maharajas College
Ernakulam-682011